

* श्रीहरिः *

परमात्मा जयति ।

दयानन्द लीला ।



रचयिता—

लाला जगन्नाथ ज

मुरादाबाद ।

चतुर्थवार
१०००

}

सन् १९१८
सं० १९७४

{

सू० ॥
सं० ३) ६०

Printed and Published by Brahm Dev
Misra at the Brahma Press-Etawah.

परमात्मा जयति ॥

दयानन्द लीला

— १०३ —

परब्रह्म परमात्माका धर ध्यान । दयानन्द लीला ~~लिखू~~
करैं विचार विद्वान् ॥ विद्वान् विचार करैं सम्यक् यहां पक्ष-
पात का काम नहीं । सबसे मिलता है स्वर्गलोक भूँठेको कहीं
विभ्राम नहीं ॥ हे प्यारे जी दयानन्दका अनृत लेख में तुमको
सुनाऊँ । जो हैं विद्याहीन उन्हें फन्देसे छुड़ाऊँ ॥ रखा नाम-
सत्यार्थ जिस का सत्य का उसमें नाम नहीं । मेरे कलाम में
किसी को यारो हरगिज जाय कलाम नहीं ॥ १ ॥ सत त्रेता
छापर गये आये कलि महाराज । स्त्री पुरुषों से गया धर्म कर्म
ओर लाज ॥ धर्म कर्म और लाज गई पहरा कलियुगका आया
है । विद्वानों की नहीं सुने कोई अज्ञोंने शोर मचाया है ॥ मत
दयानन्दने भारतमें अपना एक नया चलाया है, वचनोंको ऋषि
और मुनियोंके उसने भूँठा ठहराया है ॥२॥ प्रथम ग्रंथ उसने
रचा जो सत्यार्थप्रकाश । बहु प्रकार उससे हुआ सत्यधर्म का
नाश ॥ हो गया नाश सद्धर्म सकल गोवध तक उसने गाया है ।
दो पिण्ड मांसके पित्रोंकी यह भी तो हुक्म लगाया है ॥ करो
मांससे होम नित्य यह वेद वचन बतलाया है । क्या धर्म सि-
खाया शिष्योंकी रौरवका मार्ग दिखाया है ॥३॥ आज्ञा लिखी
नियोगकी जो कुछ श्रीमहराज । लज्जित उससे होंगे जिन
को है कुछ लाज ॥ है लाज हृदयमें जिनके कुछ वह तो लज्जित
हो जाते हैं । निर्लज्ज समाजमें खड़ेहुए लज्जाके वचन सुनाते

हैं ॥ हे प्यारेजी मर जाये जाँ पनि होय वा गोगी भारी । उम युवती हेतु यही मत हैं हितकारी ॥ हे प्यारेजी दश पुरुषों से करे भांग सुतके हित नारी । एक पुरुषसे जने पुत्र वह दो वा चारी ॥ स्वामीजी इस आशा का चेहों पर दोष लगाते हैं । हे बड़े अधर्मकी बात प्रकट व्यभिचार कर्म फहलाते हैं ॥४॥ गर्भ वती के हृदयमें करे किलोल जो काम । किसी पुरुषसे चाहिये करे नियोग वह वाम ॥ वह वाम नियोग करे जिससे उसके हित सुन उत्पन्न करे । यह दयानन्दकी बुद्धि है दो बार उदर में गर्भ धरे ॥ हे प्यारेजी देखो जरा विचार गर्भ हैं पहले जिस को । रहै गर्भ किस भाँति दूसरेसे फिर जिसको ॥ पेसी बातें सुनने से भी सज्जन पुरुषों का चित्त उरै । पर पुरुष संग जो करे नारी तो क्यों न पति विष ग्वाय मरे ॥५॥ फिर स्वामीजी ने किया यही अधर्म उपदेश । धन संग्रहके हेतु जो जाय पति परदेश ॥ परदेश पतिको गये हुए जय तीन साल भी जाय गुजर । करके नियोग तब किसीसे जन पैदा करले दिलबंद पिसर ॥ शौहर जय घरपर भाजाये तब छूटजाय वह यार मगर । क्या खूब हिदायत करते हैं नहीं रहा किसीका खौफो खतरा ॥ खौफ उनको खालिक का नहीं था । लिखा उनके दिलमें जो कुछ आया ॥ गरज हक्की बातिल से न थी कुछ । दीन अपना जैसे चला चलाया ॥६॥ जिनाकारी की आपने यहां तक की तालीम । हुआ न सभ्र दिल को मगर किया तब तरकीम ॥ तरकीम किया स्वामीजी ने शौहर जो हो घरसरे जीरो जफा । औरत को यही मुनासिब है होकर उससे फिलफौर जुदा ॥ करके नियोग फिर किसीसे वह पैदा करले लड़की लड़का ॥

खालिक बचाये इन लोगोंसे जिनको मुतलक नहीं शर्मो हया ।
 शर्म जिनके दिलमें कुछ न आई । कुबूल कीहै कैसी बेहयाई ॥
 हुक्म जनको देते हैं जिनका । इज्जत सारी मिट्टीमें मिलाई ॥ ७ ॥
 दयानन्दकी देखिये और एक खुश तक्ररीर । संस्कारविधि में
 किया यह उसने तहरीर ॥ तहरीर किया स्वामीजी ने मुरदेको
 आग लगाओ अगर । चन्दन कपूरसे मिलाहुआ घी बीस सेर
 डालो उसपर ॥ हे प्यारेजी इतना हां नहीं धीव मृतकको तो
 न जलाओ । जंगल में एक ठौर कहीं उसको छोड़ आओ ॥
 अब खिरदमन्द इन्साफ़ करें और समझें इसके सूदो जरूर ।
 क्या करूं ययां तफसीलघार खामोश ही रहना है बेहतर ।
 मुरदे जिस दम जंगलमें पड़ेंगे । चील कडवे ले लेकर उड़ेंगे ॥
 सख्त बवा फँलैगी जहांमें । मांस उनके गल २ कर सड़ेंगे ॥
 विद्वान् कोई स्वामी जी सा भारत में नहीं हुआ खुदसर । ये
 पंथ कोई दिन रहा अगर भारत ग़ारत होगा जलकर ॥ ८ ॥
 लिखी सर्वदा के लिये मुक्ति आप सौ चार । पतित हुए निज
 कर्मसे बंधन लिया विचार ॥ पहले अपने सब ग्रन्थों में मुक्ति
 सुख अक्षय माना है । फिर कहने लगे बिपरीत बात एक दिन
 वहां से लौट आना है ॥ किंया व्यास के बचन का स्वामीजीने
 अपमान । वेद और वेदांगका जिनको कहते हैं विद्वान् ॥ कहा
 मुक्तिको फांसी सम और कारागार समान, दयानन्दकी बुद्धि
 पर छाया कैसा अज्ञान ॥ पाप पुण्य जब दूर हुए तो फिर
 शरीर क्यों पाना है । जो कहै मुक्ति से लौट आना जानो
 उसको दीवाना हैं ॥ ९ ॥ कर्म श्राद्ध पहले लिखा मृत पुरुषों

का थाप । फिर किसने समझा दिया उलटा किया विलाप ॥
 सुरदोंका श्राद्ध लिखा पहले फिर उसको गलत बताया है ।
 ये खस कहो स्वामीजीके दिलमें किस तौर समाया है ॥ जीवों
 की प्रथम उत्पत्ति लिखी पीछे बनादि कह गायी है । दावा
 या आलिम होनेका ये धोखा कैसे खाया है ॥ श्राद्ध पहले सु-
 रदों का बताया । पीछे उसको झूठा क्यों ठहराया ॥ उत्पत्ति
 पहले जीवोंकी लिखा थी । मार्ग सीधा किसने फिर दिखाया
 ॥ १० ॥ गायत्रीके विषयमें गुरु का देश अज्ञान । लिखा कि
 चारों वेदमें है यह मन्त्र समान ॥ चार वेदमें गायत्रीको दया-
 नन्द बतलावें । भव अधर्वमें उनके चेले हमको भाय दिखावें ॥
 पाठमात्रका वेद के उनको जो होता कुछ ज्ञान । तो अशुद्ध
 लिखते क्यों ऐसा समझें तो चिद्धान् ॥ मिले न जो उस वेद
 में ये तो फिर दिलमें शरमावें । ऐसे गुरुका पीछा छोड़ें जिस
 से लाज उठावें ॥ ११ ॥ लिखा मनुके नामसे मिथ्याही धोमान ।
 विविध रत्न और स्वर्णका संन्यासीकी दान ॥ जब धन सं-
 ग्रह में प्रीति बढ़ी झूठा ही श्लोक बनाया है । लें जान भृत्य
 जन सत्य उसे इससे मनुका बतलाया है ॥ है नहीं मनुमें कहीं
 पता दिखलावे कोई विद्वान् । झूठो बातोंमें आजायें हम नहीं
 ऐसे अनजान ॥ संन्यास धर्म का त्याग किया धनसेही स्नेह
 लगाया है । छल कपट किया स्वामी जी ने तब तो धन लाख
 कमाया है ॥ स्वामीजीने धन से स्नेह लगाया । श्लोक झूठा
 मतलब का बनाया । कपट देखो कैसा ये किया है । बचन
 अपना मनु जी का बताया ॥ १२ ॥ दाइप का छाप, खुला

बढ़ा अधिक व्यापार । रोज़गार ऐसा कहाँ उठे एकके चार ॥
 लागत हो एक रुपये की और चार खुशी से उठ आवें । सी
 पचास धर्मार्थ भेंटके मास माममें आजावें । हे प्यारे जी छपे
 ग्रन्थ व्याकरण तो फिर चन्दा मगवाया । पांत्र हज़ारके नि-
 कट द्रव्य दम भर में गाया । ठहरें जिस रजवाड़े में यहाँ से
 भी दो हजार पावें । शाल दुशाले ओढ़ें और फिर संन्यासी
 ही कहलावें । पहले टुकड़े मांग मांग कर खाये ? पाँछे भोजन
 मनमाने ही पाये ॥ पेश उनकी किसमत में लिखा था ॥ देखो
 यारो कैसे मजे उड़ाये ॥ १३ ॥ रूप रूप यह वचन मुण्डकका
 बतलाय । स्वामी जीने बल्लता अपनी दी दिखलाय । हे कहाँ
 वचन ये मुण्डक में हमको आकर दिखलाये कोई । विद्या का
 हुस्न जो रखता हो यारों के सन्मुख आये कोई ॥ यद्वै मनु-
 श्रुति छान्दोग्य की कहते हैं जो आप । दिखलाओ उपनिषद्
 में हमको तब होंगे निष्पाप ॥ हे श्लोक कहाँ वह ग्रहण विषय
 का शिरोमणी मंगवाय कोई । सत्य भूँटकी करके परीक्षा
 जी में तो शरमाय कोई ॥ शर्म जिस को भूँट यातसे होवे ।
 ग्रन्थ भूँटे गंगामें डुबोवे ॥ त्याग भूँटे गुरुका करके सम्पक् ।
 सत्यरूपी अमृतसे मुख धोवे । समित्पाणि श्रुति मांडूक्यमें
 कहीं नहीं ले देख । दयानन्दके और भी ऐसे मिथ्या हैं बहु
 लेख ॥ १४ ॥ लिखा समाधिनिर्धूत इति वचन उपनिषद् प्र-
 मान । सी भी दशमें हैं नहीं हंसे न क्यों विद्वान् ॥ हैं दश उप-
 निषद् प्रमान तुम्हें उनमें यह वचन देखाओ कहीं । स्वामी जी
 को सच्चा जानो तो इसका पता लगाओ कहीं ॥ नहीं सत्यात्

इस वचनको भी उपनिषद्में तुम बतलाओ कहीं । देखो अ-
ज्ञान गुरुजीका अब तो दिलमें शरमाओ कहीं ॥ अज्ञान देखो
स्वामी जीका भाई । कथा जो कुछ गाई उलटी गाई ॥ असत्
उनके ग्रन्थोंमें भरा है । अब तो थारो करलो कुछ सफाई ॥ १५ ॥
कहीं तदैक्षत श्रुतिको तैत्तिरीय की आप । वह उसमें कहीं है
नहीं कहिये किसका पाप ॥ ये पाप कहा लेखक का है या
संन्यासी अज्ञानीका ॥ अज्ञान शोधने वाले था या तेरे गुरु
अभिमानि का । था स्वामी जीके शिर पर तो आवेश अवि-
द्यारानीका । जो झूठ बातका पक्ष करे है दोष उसीकी नानी
का ॥ १६ ॥ शारीरिक संक्षेप का जीवेशी यह श्लोक । द्या-
नन्दजीने लिखा महाशोक महाशोक । है महाशोक स्वामीजी
ने जिस मतमें शिर मुंडवाया है । एक तुच्छ बात उस मतकी
लिखी उसमें भी धाखा खाया है ॥ शारीरिक संक्षेप में हमको
दो ये वचन दिखाय । नहीं पावें जो वहां तो पूछो गुरुसे अपने
जाय । कहीं शारीरिक भाष्यमें भी ये वचन मित्र नहीं आया है,
बीड़ा क्यों झूठी बातोंका फिर तुमने वृथा उठाया है ॥ १७ ॥ है
सत्यार्थप्रकाश में यह भी मिथ्या लेख । तान भागवत पर किया
गुरुने तेरे देख ॥ ले देख भागवतपर तेरे गुरुने जो दोष लगा-
या है । वहां प्रकट अक्षता को अपनी स्वामीजी ने दिखलाया
है ॥ प्रह्लाद भक्तकी कथामें जो लोहेका खम्भ बताया है । अग्नी
में उसे तपाना और चिड़टीका चलना गाया है । है नहीं भाग-
वत में प्यारे ये कहीं भी तीनों बात । ये ग्रंथ नहीं कुछ छिपा
हुआ और कथा भी है विख्यात ॥ १८ ॥ लिखा भक्तर के वि-

पयमें जां आधा श्लोक । नहीं भागवतमें कहीं देखें सज्जन लोग ।
 देखें सज्जन लोग जरा ये स्वामीजीकी माया है । मेह वृथा भा-
 गवत चाले पर दुर्वचनों का बरसाया है ॥ चले अक्रूर मथुरा
 से जो करके कसद गोकुल का । फजर से शाम को पहुंचे
 दिखाओ ये लिखा हमको । थे सघार जिस रथमें वह चलता
 था वायु समान । दिखाओ यह कहां लिखा है हमको श्रीमान् ।
 था सत्य असत्य का ज्ञान न कुछ जो जी में आया गाया है ।
 खर तालकी कुछ भी खबर नहीं और फूटा ढोल बजाया है ॥ १६ ॥
 शूद्रो ब्राह्मण० श्लोक से लिखा जो वर्ण विभाग । आशय मनु
 का आपने दिया सर्वथा त्याग ॥ जो मनु ऋषिका आशय था
 वह स्वामी जी ने त्याग दिया । करके कपट वहां कपट मुनि
 ने अपना मतलब साध लिया ॥ अनुलोम और प्रतिलोम विषय
 में है वहां यह श्लोक । देखें छल सन्यासी जी का सम्यक् स-
 ज्जन लोक ॥ जानबूझ कर पोषराज ने अर्थ का देख अनर्थ
 किया । लिखा पुराण के वक्ता को और भांग का लोटा आप
 पिया ॥ २० ॥ श्रीशंकर की मृत्यु का लिखा है जो अहवाल ।
 जानो उसको सर्वथा स्वामी जी का जाल ॥ ये जाल रचा
 स्वामीजी ने झूठा इतिहास बनाया है । दो जैनों ने विषयुक्त
 अन्न शंकर को कोई खिलाया है ॥ फोड़े फुन्सी निकले उनके
 और गई इसी में जान । यह कथा लिखी है कहां भला दिख-
 लाये कोई विद्वान ॥ स्यात् ऐसा हो स्वामी जीने नाम अपना
 यहां छुपाया है । कुछ हाल मृत्युका अपना ही चेलोंको प्रथम
 सुनाया है ॥ जहर किसने शंकरको खिलाया । दोष झूठा जैनों

कालगाया ॥ लिखा नहीं शंकरदिग्विजयमें । जानो इसको दया
 नन्द की माया ॥ २१ ॥ रचा सृष्टिकी आदिमें ब्रह्माको भगवान् ।
 दिया वेदका हृदयमें उनके सम्यक् ज्ञान ॥ प्रथम वेद ब्रह्मा के
 मनमें ईश्वरने दरशाया है । पीछे और ऋषि मुनियोंने उन के
 द्वारा पाया है ॥ क्यों अग्नि वायुमादित्यका तुम्ह को छाया
 है अज्ञान । लिख वेदद्वार प्रकाशका उत्तर जो है कुछ अभि-
 मान ॥ श्रीमन्मुन्शी इन्द्रमणीने उक्त ग्रन्थ छपवाया है । दया-
 नन्दके अनृत कथन को अनृत कर दिखलाया है ॥ वेद प्रथम
 ब्रह्माजी पर आये । पीछे उनसे ऋषि मुनियोंने पाये ॥ धोखा
 बड़ा स्वामीजी ने आया । गीत जो कुछ गाये उलटें गाये ॥ २२ ॥
 स्वर्ग नर्क सुख दुःखका माना तुमने नाम । है सत्याख्य चिरंजि-
 ये दयानन्द का काम ॥ मठवल्ली में स्वर्ग लोक का लक्षण खूब
 दिखाया है । है लोक विशेष स्वर्गक यही शतपथ में भी दर्-
 शाया है । है स्वर्ग सिद्धि को देख जरा मिल जाये सब अज्ञा-
 न । कर पक्षपात का त्याग बात जो सच है उसको मान ।
 जो बड़ा सत्यकी नीका पर स्वर्ग उसने निश्चय पाया है । है
 नरक लोक का बास उसे जिसने सचको झुठलाया है ॥ २३ ॥
 लिखा निवेध भाष ही प्रथम शूद्र वर्ण को वेद । फिर उसके
 लिये की विधि हुआ परस्पर भेद ॥ यह दयानन्दकी बुद्धि है
 यहाँ कुछ गावें यहाँ कुछ गावें । कहीं लिखें धूमना पृथिवीका
 कहीं ध्रुवा उसीकी बतलावें । उपवास किसी का सत्य नहीं
 सत्यार्थ में ये धोखा खावें । फिर तीन उपवास शिशुके लिये
 उपनयन कर्ममें फरमावें ॥ २४ ॥ जिन कर्मों से मनुज के पाप

होंय सब नष्ट । निज ग्रन्थोंमें आपने लिखे वचन वे स्पष्ट । वे वचन स्पष्ट सब ग्रन्थोंमें स्वामीजीके ही आये हैं । श्रुतियोंका भाषा लिख २ कर सबको सम्यक् समझाये हैं । फिर सत्या-
र्थप्रकाश में क्या लिख बैठे यह वह आप । भोगे बिना छूट नहीं सकता कहीं कभी कोई पाप ॥ ध्यानन्दकी बुद्धि ने कि-
तनोंके धर्म मिटाये हैं । शतपथकां तेरह तीन किया और कु-
पथ अनेक चलाये हैं ॥२६॥ लिखा नाम परमात्माका नारायण
आप । स्वामी जी का हां गया उद्य कोई फिर पाप ॥ होगया
उद्य फिर पाप कोई उसने यह पाप कराया है । नारायणनमः
को उनसे वेद विरुद्ध लिखवाया है ॥ हे शोक लिखें इस परम
मन्त्रको वेदविरुद्ध महाराज । पूर्ण हुआ सन्यास आपका तजी
शर्म और लाज ॥ लाज शर्मका त्याग किया मनमें आया सां-
गाया है । गाया क्या उलटा गीत दाय अमृतको विष ठह-
राया है ॥२७॥ वेद भाष्यमें लिखचुके नमः शिवाय यह मन्त्र ।
फिर उसकी निन्दा लिखी ऐसे बने स्वतन्त्र ॥ नमः शिवाय
यह मन्त्र देख लो यजुर्वेद में आया है । स्वामी जी ने निन्दा
उसकी करके क्यों पाप कमाया है ॥ परमहंस ने परममन्त्र
निन्दाको ही ठहराया है । सब ग्रन्थोंको भूँटा कटकर वेदोंपर
हाथ चलाया है ॥ भांग कैसी स्वामीजीने पी है । निन्दा देखा
वेद वाक्यकी की है ॥ धर्म जिसने उलटा सब चलाया । वह
तो पारो कलियुग का ऋषि है ॥ २८ ॥ करे आर्यावस्त में जो
सब दिनसे वास । वही आर्य जो धर्म में निशि दिन करे प्र-
यास ॥ जो करे प्रयास निज धर्म कर्ममें वही आर्य कहाता

हैं। पहिले लिख चुके थे स्वामीजी अब कलियुग उन्हें भ्रम्राता हैं ॥ ये लिखा आर्योंकी तिब्बतमें हुई मथम उत्पत्ति। वहाँ से बसे यहाँ आकर अब उन पर पड़ी विपत्ति। ये वचन अनार्य-कुलका दीपक गुरुको तेरे ठहराता हैं। जां तिब्बत में उत्पन्न हुए, उनको अनार्य बतलाता है॥ दोष तुने शिष्योंको लगाया। अनार्य अपने वृद्धोंको बनाया ॥ विरोध आया तेरे ही कथन में। भ्रष्टान कौसा बुद्धि पर ये छाया ॥२६॥ स्वामीजी का लेख है करें विचार विद्वान्। विद्याका एक चिन्ह तुम लो जनेऊ को जान ॥ यज्ञोपवीतकी जो तुमने विद्याका चिन्ह बताता है तो आठ वर्षके बालकका फिर क्यों उपनयन कराया है ॥ हे प्यारे जी होजाते विद्वान् तभी उपनयन कराते। न्यूनाधिक्य की और कोई पहचान बनाते ॥ उस चिन्हको बलों के नीचे फिर तुमने बूथा छिपाया है। जो तमगा था ये विद्याका ऊँ पर क्यों नहीं खमकाया है ॥३०॥ पहले लिखा जो आपने संन्यासीका धर्म। मेट दिया फिर क्यों उसे यह क्या किया कुकर्म ॥ यह किया कुकर्म स्वामीजी ने संन्यास धर्मको छोड़ दिया। भोजन बख भोग धन संग्रहमें बुद्धि को जोड़ दिया ॥ पहले लिखा कि संन्यासी को धनका नहीं अधिकार। फिर स्वामीजी ने फहलाया लाखोंका व्यापार ॥ वेद शास्त्रकी निन्दाकी और मुख सुमार्गसे मोड़ दिया। शिखाका छेदन कर-आया यज्ञोपवीतको तोड़ दिया ॥३१॥ स्वामीजी यह लिखचुके हैं न्यस्तार्थ प्रमान। शिखा सूत्र जिसके नहीं वह ईसाई समान ईसाई समाज लिखा उसको जिसके नहीं शिखा सूत्र हेचे।

दोनों से हीन थे स्वामी जी अब हंसे समाजी या रोवें ॥
 अपने ही लेखसे ठहरे वह देखो ईसाई समान । या मुसलमान
 की मद्रश कहो जो है सत्यार्थ प्रमान ॥ ऐसे के पंथ में होकर
 क्यों कोई धर्म ब्रथा अपना खोवें । अनुयायि किसी का कभी
 न बनकर सत्य ग्रहण सुखसे सोवें ॥ आंक्षा शिखा छेदन की
 भी दी है । अशुद्धि कैसी गुरुने तेरे की है ॥ विरोध अपने लि-
 खने में न सूझा । आज थारो गाढ़ी २ पी है ॥३२॥ स्वामीजी
 ने किस लिये किया जनेऊ का त्याग । इसका उत्तर है यही
 कहदो तुम बेलग ॥ स्वामीजीने अपने को जब विद्यासे खाली
 पाया है । विद्या का चिन्ह जो समझे थे इस से जनेऊ तुड़
 बाधा है ॥ बिना जनेऊ वाले को जब ईसाई समान बनलाया
 है । संन्यास दशमें त्याग उसका यह मिथ्या बचन सुनाया है ।
 निशाने इहम है गर यह तो बतलादो किसलिये नादा । मुसलमानों
 के बराबर उसके तारिकको लिखा तूने ॥३३॥ स्वामीजी ने वेद
 की शाखा ली जो मान । महा भाष्यसे चार का उसमें अन्तर
 जान । है चार का अन्तर उनमें भी स्वामीजी ने कैसी पी है ।
 जो बात लिखी उसमें अवश्य कुछ ना कुछ गलतीही की है ॥
 वह महाभाष्य का बचन लिखा स्वामीजी ने भी आप । देखो
 नामिक का पृष्ठ तीन खुल जाये उनका पाप ॥ हमको नहीं
 द्वेष किसीसे जरा जो बात थी सच सो लिखदी है, अब करो
 विचार हे मित्र तुम्हीं गुरुजी की बुद्धि कितनी है ॥३४॥ शंकर
 मतमें आपका था अहिले अनुराग । ग्रहण किया फिर द्वैतको
 करिके उसका त्याग ॥ त्याग दिया उसको निश्चय पर गन्ध

उसी की आती है । कहते हैं द्वैतवादी होकर ईश्वर का नहीं विजाती है ॥ हे प्यारेजी द्वैत अद्वैतका तत्त्व कहो तुमने क्या जाना । प्रकृति जीवका भेद ब्रह्ममें जो नहीं माना ॥ शिखासूत्र का त्याग किया है जिस मतमें महाराज । खण्डन करके उस का सम्यक फिर करो हो मण्डन-भाज ॥ थो उरमें बसी अ-विद्या जा बुद्धि को बन्नी भ्रमाती है । स्वामीजी को आकाशसे फिर पाताल हमें पहुंचाती है ॥ गाई तुमने उलटीही प्रभाती, बने तुम तो शंकर के घराती ॥ द्वैतवादी होकर यह न कहना नहीं कोई ईश्वरका विजाती ॥३५॥ सृष्टिवर्षगत शेषकी लिखी व्यवस्था मूल । दो करोड़ से अधिक है स्वामी जी की मूल ॥ है दो करोड़ से अधिक मूल क्या खूब हिसाब फहलाया है । लाख उनलठ बीसहजार पड़े तब लेखा पूरा पाया है ॥ फर बैठे गवन करोड़ों का श्री स्वामी जी महाराज । दो बार हजार से होता है कहीं सिद्ध बड़ों का काज ॥ पूछो जाकर स्वामी जी से किसने उनको बहकाया है । ये मूल है लिखने वालोंकी या भाग ही धोखा खाया है ॥३६॥ ईश्वरका आह्वान जब लिया स्वामीजी मान । उनके मत में हा गया परिच्छिन्न भगवान ॥ परिच्छिन्न भगवान हुआ क्या उलटी बात बनाई है ॥ पञ्चयज्ञ में परिक्रमाका ईश्वर की है विधान । परिच्छिन्न है मतमें तेरे निश्चय ही भगवान् ॥ त्याग दिया सन्यास धर्म को धनसे प्रीति बढ़ाई है । परब्रह्मसे विमुक्त हुये सारी बुद्धि बौराई है ॥ बुद्धि तेरे स्वामीजीकी बौराई । सन्यासी होकर धन से प्रीति बढ़ाई ॥ दोष उसने ईश्वरको लगाया । है यह सारी कलियुग की प्रभुताई ॥३७॥ स्वामीजीका देखिये और एक अ-

ज्ञान । शास्त्र विरुद्ध प्रत्यक्ष ही लिया उन्होंने मान ॥ निद्रा आलस्य दूर होय मार्जनका फल यह माना है । कफ पित्तकी शान्ति करता है आचमनका गुण ये जाना है ॥ दो काल होम जो करते हैं होती है वायु शुद्ध । ये कथन गुरुका तेरे मित्र है निश्चय शास्त्र विरुद्ध ॥ स्वामीजीको निज शिष्योंसे सब धर्म कर्म छुड़वाना है । होजाय अरुचि इन बातोंमें इससे यही ढोल बजाना है ॥३८॥ दयानन्दका लेख है तू निश्चय कर जान । स्त्री पुरुषोंके लिये है यही धर्म प्रमान ॥ द्विज कुलके स्त्री और पुरुष बस एकहि बार विवाह करें । मरजाय पाति अथवा पत्नी तो फिर न विवाह की चाह करें ॥ क्यों करें सगाजी पुनर्विवाह जो ये वेद विरुद्ध । जीमें स्यात अपने जानते हों गुरुजीका लेख अशुद्ध ॥ ये लोग वृथा झूठी बातोंसे औरोंको गुमराह करें । ग्रन्थोंमें अपने लिखा है जो उसके विरुद्ध उरसाह करें ॥३९॥ ऋक्ष नदी पर्वत अही वृक्षादिकपर नाम । ऐसी कन्यासे नहीं उचित विवाहका काम ॥ ये लिखा तुम्हारे स्वामीने तुम सम्यक् इसपर ध्यान करो । बरके ऐसी कन्याओंको मत गुरुजीका अपमान करो ॥ जो लिखा हो ऐसा वेदोंमें तो करो न वेद विरुद्ध । ये लिखा नहीं है वहां कहीं जानो सत्यार्थ अशुद्ध ॥ पढ़के सत्यार्थ समीक्षा को गुरु खण्डनका सामान करो । मैं हितकी कहता हूं तुमसे अब दूर अपना अज्ञान करो ॥ तुम दयानन्द के गीतों पर बस मत इतना अभिमान करो । खुलंगई ढोलकी पोल वृथा स्वर ताल बिना क्यों गान करो ॥ मत झूठ करो नादानोंको इतना हम पर अहसान करो । कुछ बात करो

हमसे आकर अपनी मुशकिल आसान करो ॥ इस जहान से चलना है अब उस जहानका ज्ञान करो । यहांके सामान किये हैं बहुत कुछ वहांका भी सामान करो ॥ हार जीतसे नहीं फायदा झूठ सबकी पहचान करो । काम कंध मद् लोभ छोड़ कर श्रीभगवत्का ध्यान करो ॥४०॥ धर्म लोपके ग्रन्थमें है ये धर्म विधान । सब मनुष्य सब देशसे लो खोका दान । सब मनुष्य सब देशोंसे खो लेना सीकार किया । कब मुसलमान ईसाईका खामीने तेरे विचार किया ॥ सब मनुष्य मैं आजाते हैं भंगी और चमार । उत्तम खो लो उन से भी करो न कुछ तकरार ॥ दयानन्द ने हाथ जगत् को कैसा भ्रष्टाचार किया । नहीं २ चेजोंका अपने बहुत बड़ा उपकार किया ॥४१॥ शूद्र वर्ण के हाथ काखा भोजन धोमान् । मान न तू मेरा कहा शूद्रका कहना मान ॥ लिखा गुरुने तेरे कि भोजन घर में शूद्र पकावें । ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सभी आनन्द से उस को खावें ॥ जो चेले पक्के हैं उन के इस रीति को चलावें । रोटी नाई धोबी से बनवा कर भोग लगावें ॥ जारी अब तो होटलका है खाना । सोडावाटर और बर्फ मंगवाना ॥ रोटी नाई धोबीसे कराओ । माया यारो कलियुगका जमाना ॥४२॥ संस्कार विधि का तेरी है यह साफ वयान । खाय भात जो मांससे जने पुत्र विद्वान् । वह जने पुत्र विद्वान् भातको मांस युक्त जो खावे । वेद और वेदांग पढ़े सुन विजय युद्धमें पावे ॥ भजा मांस औ मांस तित्तिरी जिस बालकको खिलावे । अनादिक और विद्याकी सिद्धि उसकी हो जावे ॥ ४२ ॥ कडि

ने घुमकर हृदयमें दरा बुद्धि और ज्ञान । लिख बैठे सत्यार्थमें
 धर्म लोप धोमान ॥ जो लड़के लड़की शूद्र सदृश हों उन्हें
 शूद्रको देदेवे । निज वर्ण समान लड़के लड़की उनके बदले में
 ले लेवे ॥ शूद्र पुत्र और द्विज कन्याका हो जब मित्र विवाह ।
 दयानन्दके खेलोंमें हो क्यों न अधिक उत्साह ॥ जो समाज
 गण गुरु आज्ञा को तन मन से अब नहीं लेवे । स्वामीजी को
 जाने कखा और आखू से दामन भेवे- ॥ विद्या तेरे स्वामी
 की थी छोटी । बुद्धि तेरे स्वामी की थी मोटी ॥ ज्ञान उनको
 था नहीं भले बुरे का । आज्ञा तेरे स्वामीकी है खोटी ॥ ४४ ॥
 दयानन्द की अज्ञता कहां तक करूं बयान । गऊ गध्रीको आप
 ने लिखा है एक समान ॥ गऊ गध्री को समान लिखा विद्वान्
 ने क्या ही विचार किया । बलदेव की माता रोहिणी थी उन
 को पत्नी ही सुमार किया । हाथ २ माताको पत्नी लिख बैठे
 महाराज । विद्वानों को मुंह दिखलावें नहीं शर्म और लाज ॥
 हे प्यारेजी कुंभकर्ण की मूँछ एक योजन की बतलावें । तुल-
 सीदासको दोष मृषा स्वामीजी लगावें ॥ कालत्रय दर्शी ईश्वर
 को कहने से भी इनकार किया । जब पड़ी विपत्ति स्वामीजी
 पर तो फिर इसका इकरार किया ॥ ४५ ॥ सोमनाथके विषयमें
 लिखी है झूठी बात । छोटे लड़के भी तुम्हें करदेंगे अब मात ॥
 मात मेरे सन्मुख तूने हरबात पै पे नादां खाया । दिखला ता-
 रीख में तब ये भी स्वामी ने तेरे जो फरमाया ॥ चुम्बक की
 शिला लगी थी वहां ये कहां लिखा उसने पाया ॥ थी अधर
 मूर्ति सड़ीहुई ये झूठ वृथा क्यों छपनाया । हे प्यारेजी हाथी

दांत की मूर्ति वहां सादी ने बतलाई ॥ दयानन्द के हृदय वही
 लोहे की समाई ॥ हिन्दू के बेटे को अब तक अज्ञान नहीं ऐसा
 छाया । शिवमूर्ति कहें जो लोहेकी यह दयानन्द की है माया
 ॥४६॥ मिथ्या भाषण में अधिक था उनका अनुराग । सद्भा-
 षण का भी किया स्वामीजीने त्याग ॥ कर दिया त्याग सद्-
 भाषण का मिथ्या भाषण स्वीकार किया । दोष अपने लिखने
 का देखा औरों के शिर पर भार किया ॥ श्राद्ध तूने मुरदोंका
 छपाया ॥ दोष भूँटा लेखक को लगाया ॥ अशुद्धि निकली
 वाक्योंमें जो तेरे ॥ मूर्ख तूने चेले को बनाया ॥ हे प्यारेजी
 आप मृतक का श्राद्ध लिखा आपही छपवाया । फिर लेखक
 का दोष हाथ उसको बतलाया ॥ वाक्य प्रबोध नाम से अपने
 छपवाकर तैयार किया । किन्तु हाथ लेखक को फिर अपयश
 का भण्डार दिया ॥ ४७ ॥ दिव धातुको लिखकर गये उभय-
 पदी श्रीमान् । वैद्याकरणी कौन है और ऐसा विद्वान् ॥
 हे कौन ऐसा विद्वान् उभयपदी दिवधातु को गावे । ये
 दयानन्द की शक्ति है जो फूटे ढोल बजावे । जो कोई
 समाजमें हो पंडित वह सन्मुख मेरे आवे ॥ किसी कोष
 (ग्रन्थ) में दिवधातु को उभयपदी दिखलावे । बुद्धि उसकी
 वाक्य प्रबोधने खोई । दशा कोई दिवधातु ने सोई ॥ धर्म उ-
 सकें हाथोंसे मिटा है । विद्या उसकी जड़ताई पै रोई ॥ ४८ ॥
 जिस मतमें लाखों पुरुष वह भूँटा नहीं होय । जो भूँटा उस
 को कहै जानो भूँटा सोय ॥ यह युक्ति तुम्हारे स्वामीकी अप-

ने ही घरका ढाता हूँ । सब मतों को सच्चा ठहराकर उनकी भूँटा ठहराती हूँ ॥ सब मतोंको भूँटा कहा तेरे स्वामीने निश्चय जान । निज मतको सच्चा बतलाया अब संभज जरा धीमान । हूँ मुमंलमान ईसाई करोरों उनकी नींव जमाती हूँ । स्वामीजी के मतकी जड़को पृथ्वीसे खोद गिराती हूँ ॥ युक्ति तेरी भूँटा तुझे बनावे । और सबको सच्चा ये ठहरावे ॥ ४६ ॥ थोड़ा भी जिस ग्रन्थमें लेा असत्य तुम देख । छोड़ा उसका सत्यभी स्वामी जी का लेख ॥ ये लेख देख स्वामी जी का सत्यार्थप्रकाश में आया है । हमने भूँटा उनके ग्रन्थों में सम्यक् नुक्तको दिखलाया है ॥ जो लिखा है तेरे स्वामीने करदे उस सबका त्याग । ले जान समान बिपकी उसको मतकर बिपमें अनुराग ॥ सत्यार्थप्रकाशका भूँटा तेरे स्वामीही को मनभाया है । पहले जो उसने छपवाया पीछे फिर आप मिटाया है ॥ हे प्यारेजी सत्य असत्यका भेद तेरे गुरुने नहीं पाया । लिखों असत्यको सत्य सत्यको अनृत बताया ॥ तरदीदमें तेरे स्वामीजी की जब हमने कलम उठाया है । एक २ बातके खण्डन में ग्रन्थ एक २ छपवाया है ॥ ५० ॥ दयानन्द महाराजने दिया हुक्म यह आप । करो नमस्ते प्रगुपर जब २ होय मिलाप ॥ ये मन्त्र नमस्ते दयानन्दने शिष्योंको क्या सिखलाया । निज कपोल कलिपत ढकोसला शास्त्र विरुद्ध चलाया ॥ श्रीइन्द्रमसीसे चार २ इस बात पै मात उसने स्वीया । मंगलदेव पराजयमें हमने भी खण्डन छपवाया ॥ ५१ ॥ तेरे गुरुके लेखपर

क्यों न हूँसे विद्वान् । ले सत्यार्थप्रकाशमें देख उसका अज्ञान
 सत्यार्थप्रकाश ये ग्रन्थ मित्र अज्ञान अधर्म की ग्यानि है । तु
 जान यथार्थ यह बचन मेरा सद्धर्म की इससे हानि है ॥ हे
 प्यारेजो मैंने इसके दोष तुम्हें सम्यक् समझाये । देख ठाक
 के फूल वृथा तुम क्यों इतराये । गोवध तक जिसने लिखा
 हाय कौन उससा और अज्ञानी है । इस मतमें जो कोई फंसे
 यार घेशक उसकी नादानी है ॥५२॥ केवल तुमको संहिता है
 प्रमाण जो चार । तो अपने मन्तव्य को करो वेद अनुसार ॥
 चार संहितामें संध्याकी आगाहमको दिखलाओ । जो किया
 लिखी जिन मन्त्रोंसे चिस्तार सहित वह बतलाओ ॥ हे गोत्र
 सपिएडका दार कर्ममें त्याग कहाँ ये फरमाओ । बलिवेश्वदेव
 की पूर्णविधि वेदोंसे सम्यक् समझाओ ॥ संस्कार सोलहको
 सम्यक् करो वेदसे सिद्ध । आठ प्रमाणका लक्षण कहिये हैं वह
 कहाँ प्रसिद्ध ॥ जो कुछ तुमने धर्माधर्म पहिचाना । वह सब
 हमको वेदोंमें दिखाना ॥ बात झूठी जो कुछ यहाँ बनाई । तो
 फिर होगा और अधिक पछताना ॥५३॥ नागवेद निधि चंद्रमा
 विक्रमाब्द पहिचान । ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी पूर्ति ग्रन्थ की
 जान ॥ होगया पूर्ण यह ग्रन्थ भी अब जो दयानन्दकी लीला
 है । जिस दिनसे पुस्तक छपे मेरे हाल आर्यसमाजका डीला
 है ॥ जो गाड़ी देते फिरते थे अब उनका भी मुख पीला है ।
 अब नहीं किसीसे जगन्नाथ भगवत्का जिसे बसीला है ॥५३॥

॥ इति ॥

